PHILOSOPHY

Hons., Paper - VII (Part III)

Socialism (समाजवाद)

Dr. S.K. Singh
Mob-9431449951

→ समाजवाद व्यक्तिवाद एवं पूंजीवाद से उत्पन्न सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया है। इसका लक्ष्य है - भूमि और पूंजी पर समस्त समाज का स्वामित्व ताकि समाज के सभी वर्गों का आनुपातिक भाग सुनिश्चित किया जा सके। मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी मानने वाला यह सिद्धान्त आदर्शों के रूप में समानता को प्रमुख मूल्य मानता है।

→ समाजवाद उन प्रवृत्तियों का समर्थक है जो सार्वजनिक कल्याण की ओर अग्रसरित होते हैं। यह ~~सार्वजनि~~ सार्वजनिक भलाई अथवा सामान्य जनकल्याण के लिये सभी नागरिकों के समान उत्तरदायित्व पर बल देता है।

→ व्यक्ति की जगह समाज, समूह, समुदाय को महत्ता दी जाती है अर्थात यह व्यक्तिवादी न होकर समष्टिवादी है।

→ समाजवाद में समानता की धारणा सर्वोपरि है। यहाँ समानता का अर्थ है - आत्मविकास का समान अवसर। इसकी यह मान्यता है कि समानता के बिना वास्तविक स्वतंत्रता संभव नहीं है और बिना स्वतंत्रता के सुरक्षा संभव नहीं है।

→ समाजवाद समाज की एकता पर बल देता है। यह समाज को भीड़ या समूहमात्र नहीं मानता, अपितु व्यक्ति को समाज का ही अंग मानता है।

→ यह व्यक्तिवाद की तरह प्रतियोगिता या प्रतिस्पर्धा को प्रश्रय नहीं देता, अपितु सहयोग एवं सहभागिता को बढ़ावा देता है।

→ समाजवाद का आदर्श है हर व्यक्ति को उसकी मेहनत, उपयोगी श्रम के आधार पर पारिश्रमिक मिले।

→ समाजवाद उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत ~~स्व~~ स्वामित्व समाप्त करके राज्य के स्वामित्व की बात करता है।

Scanned with CamScanner

→ इस प्रकार समाजवाद को एक दर्शन, जीवन पद्धति तथा नैतिक व्यवस्था के रूप में स्वीकार किया जाता है। समाजवाद व्यक्ति और समाज दोनों के आदर्शों का निरूपण करता है। समाजवादी विचारधारा के उदित होने के पीछे निम्न दार्शनिक मूल्य दिखाई देते हैं जिनकी प्राप्ति समाज के सभी वर्गों के लिये सुनिश्चित करना था -

- स्वतंत्रता : जो आत्मा का स्वाभाविक गुण है जिसके ~~माध्यम से~~ द्वारा कोई व्यक्ति अपने सद्गुणों एवं व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करके व्यक्तिगत उत्कर्ष (मोक्ष) एवं समाज के प्रति अपना योगदान को सुनिश्चित कर सकता है।
- समानता - प्रत्येक व्यक्ति मूलत: समान है। अत: समाज में प्रत्येक व्यक्ति को आत्म-विकास के समान अवसर सुलभ होने चाहिये। समाज के लिये प्रत्येक व्यक्ति का समान महत्व है।
- न्याय - समाजवाद के पीछे मूल्य प्रेरक तत्व न्याय की अवधारणा को तत्वत: या मूल अर्थ में पाना भी है।
- सहयोग की प्रवृति एवं भेदरहित जीवन - क्योंकि इन विचारकों का मानना था कि दो व्यक्तियों के बीच प्राकृतिक स्तर या वास्तव में कोई भेद नहीं होता। जो भी भेद उपलब्ध है वह बाह्य परिस्थितियों या समाज की देन होती है।
- उत्कृष्ट जीवन - इसका आशय है कि व्यक्ति को उच्चतम गुणों से सम्पन्न जीवन व्यतीत करने के लिये अवसर निर्मित करना। उत्कृष्टता की प्राप्ति के लिये संघर्षों और चिन्ताओं से मुक्ति तथा जीवन में मूल्यों की विद्यमानता आवश्यक है। समाजवाद इसके लिये प्रयास करता है।
- ~~मानवतावादी~~ मानववादी दृष्टिकोण - समाजवाद का दृष्टिकोण मानववादी और परार्थवादी है। इसकी कार्य-पद्धति समाज सेवा की भावना से प्रेरित है। इसमें शोषण का अन्त कर सबकी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रयास किया जाता है।

Scanned with CamScanner